डा० ममता अग्रवाल
बिजनौर (उ०प्र०)
श्री वैंकटेश्वरा विश्वविद्यालय
गजरौला, जनपद अमरोहा उ०प्र०

Journal Global Values, Vol. XV, No. Special Issue 2024, ISSN: (P) 0976-9447, (e) 2454-8391, Impact Factor 8.888(SJIF)
https://doi.org/10.31995/jgv.2024.v15iS1.019

तुलसीदास जी के काव्य का दार्शनिक आधार

मानवेन्द्र सिंह
शोधार्थी
श्री वैंकटेश्वरा विश्वविद्यालय
गजरौला, जनपद अमरोहा उ०प्र०

डॉ० ममता अग्रवाल
श्री वैंकटेश्वरा विश्वविद्यालय
गजरौला, जनपद अमरोहा उ०प्र०

सारांश:

तुलसीदास जी के काव्य का दार्शनिक आधार मुख्य रूप से सनातन धर्म और वेदांत के तत्वों पर आधारित है। उनकी रचनाओं में जीवन की अनुभूतियों, आध्यात्मिकता के संदेशों और मानवीय जीवन के मूल्यों का प्रतिबिंब दिखाया गया है। उनका काव्य आम लोगों का जीवन दर्शन को सरलता से समझने में सहायक है और उन्होंने भगवान राम के चरित्र के माध्यम से आत्मविकास और समाज सेवा की महत्वपूर्णता को बताया है। तुलसीदास जी के काव्य में सत्य, धर्म, प्रेम, सम्मान, और सहानुभूति जैसे मूल्यों को प्रमुखतरू उजागर किया गया है। अपनी रचनाकारीता और दर्शन के माध्यम से, उन्होंने मानव जीवन के महत्वपूर्ण पहलुओं पर ध्यान दिलाया है और सत्य, न्याय, और प्रेम के मार्ग को प्रशंसित किया है। उनकी रचनाएँ विचारशीलता और ध्यानयोग के माध्यम से अद्वितीय आध्यात्मिक अनुभव का संदेश प्रस्तुत करती हैं। सम्पूर्ण रामचरितमानस में तुलसीदास जी ने भगवान राम के विभिन्न रूपों में उनके भक्तों को आत्मनिर्भरता, साहस, और धर्म के मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी है। उनकी रचनाएँ ध्यान, भक्ति, और सेवा के माध्यम से मनुष्य के आत्मविकास

और समाज के कल्याण की प्रेरणा प्रदान करती हैं।

मुख्य शब्द:

तुलसीदासजी, काव्य, दार्शनिक, साहित्य, दर्शन

Reference to this paper should be made as follows:

मानवेन्द्र सिंह
डॉ० ममता अग्रवाल

तुलसीदास जी के काव्य का दार्शनिक आधार

Vol. XV, Sp. Issue
Article No. 19,
pp. 137 - 144

Online available at
https://anubooks.com/journal/journal-globalvalues

DOI: https://doi.org/10.31995/jgv.2024.v15iS1.019

मानवेन्द्र सिंह, डॉ० ममता अग्रवाल

परिचय

तुलसीदास जी के काव्य का दार्शनिक आधार भारतीय साहित्य और दर्शन की गहरी प्राचीनता के अनुसार है। उनके काव्य और रचनाएं भारतीय साहित्य के महाकाव्य में गिनी जाती हैं, और उनके द्वारा बताई गई कथाएं और उनकी दार्शनिक विचारधारा आज भी समाज में महत्वपूर्ण हैं। तुलसीदास जी ने अपने काव्य में भगवान राम की महिमा को उच्चतम माना और उनकी भक्ति को गांधीवाद और धर्म निरपेक्षता के माध्यम से प्रकट किया। उनके काव्य में नीति, धर्म, भक्ति, आदर्श, और मानवता के सिद्धांत बहुत गहराई से प्रकट होते हैं। तुलसीदास जी के काव्य का दार्शनिक आधार वैशणव भक्ति और अद्वैत वेदांत के सिद्धांतों पर आधारित है। उन्होंने भगवान राम को परमात्मा के रूप में पूजा और उनके भक्त का भाव अपनी कविताओं में व्यक्त किया। उनके काव्य में साधारण जीवन की समस्याओं का समाधान और उद्धारण भी है। उनके काव्य में जीवन की अन्य सिद्धांतों जैसे की कर्म, धर्म, ज्ञान, और भक्ति का विस्तारपूर्वक वर्णन है। उनकी कविताएं मानवीय संदशों को समझाने और समाज में उनके अनुसार जीने के मार्ग को प्रशिक्षित करने का काम करती हैं।

तुलसीदास जी के काव्य में धर्म, नैतिकता, और मानवीय योग्यता के महत्वपूर्ण सिद्धांत हैं। उन्होंने अपनी रचनाओं को माध्यम से जीवन की महत्वपूर्ण मुद्दों पर ध्यान दिया और लोगों को सही मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित किया। उनके काव्य में भक्ति के माध्यम से दिव्यता की अनुभूति को व्यक्त किया गया है। उन्होंने भगवान राम की भक्ति को मन, शरीर, और आत्मा के साथ समर्थन के रूप में वर्णित किया। तुलसीदास जी के काव्य में संसारिक विषयों पर भी विचार किया गया है। उन्होंने समाज में न्याय, समाज सेवा, और सभ्यता के महत्व को बढ़ावा दिया। उनके द्वारा रचित रामचरितमानस भारतीय साहित्य का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है और आधुनिक भारतीय समाज में भी अद्वितीय महत्व रखता है। तुलसीदास जी के काव्य के माध्यम से हमें धार्मिकता, सामाजिकता, और मानवता के मूल्यों का महत्वपूर्ण संदेश मिलता है। तुलसीदास जी के काव्य का विशेष रूप से भारतीय समाज में एक गहरा प्रभाव रहा है। उनकी रचनाएं धर्म, नैतिकता, और साहित्य के क्षेत्र में एक अद्वितीय स्थान रखती हैं। उन्होंने अपने काव्य में संस्कृति, समाज, और मानवता के महत्वपूर्ण मुद्दों पर विचार किए हैं। तुलसीदास जी के काव्य में भक्ति के माध्यम से आत्म उन्नति और मुक्ति के सिद्धांत को समझाया गया है। उनकी रचनाएँ धार्मिक और आध्यात्मिक ज्ञान को आधारित करने के साथ–साथ, मानवता के प्रति उनकी सहानुभूति को भी प्रकट करती हैं। उनकी कविताओं में विविधता, समाजिक व्यवस्था, और धार्मिक अनुष्ठानों के प्रति उनका संवेदनशीलता दिखता है। उन्होंने समाज में न्याय और धर्म की महत्वपूर्णता को उजागर किया और लोगों को सही और नेतृत्वीय मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित किया। सम्पूर्णतः, तुलसीदास जी के काव्य का दार्शनिक आधार भारतीय संस्कृति, धार्मिकता, और मानवीयता के गहरे मूल्यों पर आधारित है, जो आज भी समाज में महत्वपूर्ण हैं।

भक्ति परंपरा तुलसीदास की कविता भक्ति परंपरा में डूबी हुई है, जो आध्यात्मिक प्राप्ति

के मार्ग के रूप में एक व्यक्तिगत देवता के प्रति समर्पण (भक्ति) पर जोर देती है। उनकी रचनाएँ भगवान राम के प्रति प्रेम और भक्ति की गहरी भावना से ओत–प्रोत हैं, जिन्हें वे पूर्णता का प्रतीक और दिव्य गुणों का अवतार मानते हैं। अपनी कविता के माध्यम से, तुलसीदास ने भक्ति, समर्पण और निस्वार्थ प्रेम के गुणों को परमात्मा के साथ मिलन प्राप्त करने के साधन के रूप में प्रचारित किया।

अद्वैत वेदांत जबकि तुलसीदास की राम के प्रति भक्ति उनकी कविता का केंद्र है, उनके दार्शनिक आधार हिंदू दर्शन के एक गैर–द्वैतवादी स्कूल, अद्वैत वेदांत के तत्वों को भी दर्शाते हैं। अद्वैत वेदांत के अनुसार, परम वास्तविकता (ब्राह्मण) गुणों और भेदों से परे है, और व्यक्तिगत आत्मा (आत्मान) ब्रह्म के समान है। तुलसीदास, अपनी कविता के माध्यम से, परमात्मा के साथ व्यक्तिगत आत्मा की एकता पर जोर देते हैं और इस विचार पर जोर देते हैं कि सच्ची मुक्ति (मोक्ष) आत्म–प्राप्ति और सर्वोच्च वास्तविकता के साथ मिलन के माध्यम से प्राप्त की जाती है।

धर्म की अवधारणा, तुलसीदास की कविता धर्म की हिंदू अवधारणा को भी दर्शाती है, जिसमें धार्मिकता, कर्तव्य और नैतिक व्यवस्था शामिल है। रामचरितमानस में चित्रित पात्रों और घटनाओं के माध्यम से, तुलसीदास धर्म की बारीकियों और विभिन्न जीवन स्थितियों में इसके अनुप्रयोग की खोज करते हैं। वह आध्यात्मिक विकास और परम मुक्ति के साधन के रूप में, चुनौतियों का सामना किए बिना ईमानदारी और निष्ठा के साथ अपने कर्तव्यों को पूरा करने के महत्व पर जोर देते हैं।

आध्यात्मिक खोज, तुलसीदास की कविता को आत्म–बोध और परमात्मा के साथ मिलन की आध्यात्मिक खोज के रूप में देखा जा सकता है। अपने छंदों के माध्यम से, वह मानवीय स्थिति, अस्तित्व की प्रकृति और सत्य और अर्थ की शाश्वत खोज पर प्रकाश डालते हैं। उनके कार्य आध्यात्मिक पथ पर चलने वाले साधकों के लिए एक मार्गदर्शक के रूप में काम करते हैं, जो वास्तविकता की प्रकृति और आत्मा की उसके अंतिम गंतव्य तक की यात्रा के बारे में गहन अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं।

तुलसी काव्य का दार्शनिक आधार

गोस्वामी तुलसीदास जी के काव्य का दार्शनिक आधार भक्ति है संसार असत्य है प्रभुभक्ति ही सत्य है संसार के प्रति आसक्त होना मोह है, प्रभु की ओर उन्मुख होना प्रेम या भक्ति है कविता की दार्शनिकता का प्रतिपादन करते हुये गोस्वमी जी ने ईश्वर, जगत, संसार, और जीव के स्वरूप एवं उनके पारस्परिक संबंधो की विवेचना किया है। तुलसी दास जी का मत है कि कविता में अनेक अर्थ व्यंजित होना चाहिए। तुलसी की रचना सकल जन रंजिनी मोह भ्रमहारिणी कलि कलुश विभांजिनी इसलिए है कि वह अर्थ गर्भा है इससे यह निष्कर्ष निकलता हैं कि तुलसी की दृष्टि में वही कविता सार्थक है जिससे अधिक से अधिक लोगों का अल्हाद हो सके वह अधिकाधिक लोगों का कल्याण कर सके–

"कीरति कलित भूति भलि सोई ।

सुरसरि सम सब कर हित होई ।।"

तुलसीदास जी भक्त एवं संत कवि थे। उनके विचार उदार और सुलझे हुए थे। उनका हदय विशाल और दृष्टि व्यापक थी। वे शुद्ध ह्रदय से साधु ऋषि, तत्व द्रष्टा समाज–सुधारक और मानव समाज से ही नही वरन, सम्पूर्ण जीव धारियों से स्नेह करने वाले व्यक्ति थे तुलसीदास जी के दार्शनिक विचार समन्वयवादी है । भक्ति से परमात्मा के गुण जीवात्मा मे प्रवेष करते है जिससे परलौकिक जीवन तो आन्नदपूर्ण हो ही जाता है, भौतिक जीवन भी रस सिक्त होकर सरस होता है। राम की भक्ति जीव और जगत के नाना रूपों और संबंधो को समरूप स्पष्ट करती है। उन्होंने अपरा प्रकृति और परा – प्रकृति दोनों की ओर चित्त लगाया है । तथा भक्ति और निष्ठा के माध्यम से सम्पूर्ण भावराशि को ग्रहण कर सगुण राम के माध्यम से सम्पूर्ण विश्व के कल्याण और ज्ञानोदय का मार्ग खोल दिया है।

" बारि मथे घृत होई बरू सिकता ते बरू तेल ।
बिनु हरिभजन न भव तरिअ यह सिद्धांत अपेल ।।"

गोस्वामी जी के समय में चार दार्शनिक सिद्धांत प्रचलित थे अद्धैवतवाद, विशिष्टा द्वैतवाद, शुद्धद्वैतवाद, गोस्वामी जी की अपनी श्रुति सम्मत एवं संजुम विरति विवेक हरि भक्ति के निरूपण में इन चारो सिद्धांतो का प्रभाव परिलक्षित होता है । फलतः इनका दार्शनिक मत विद्वानों के मतभेद का विषय बन गया है । प्रत्येक मतावलम्बी इनके कथनों में अपने मतो का समर्थन पाकर इन्हें अपनी और खीचता है । गोस्वामी जी ने कई स्थानों पर जगत को माया और मिथ्या बताया है। उनका कहना है कि जीवन जब तक इस मायामय संसार से विरत नही होता है, तब तक उसे प्रभु की कृपा प्राप्त नही होती है। डॉ. बलदेव मिश्र ने इसी मत का समर्थन करते हुये लिखा है–

> "गोस्वामी जी कुछ खण्डन – मण्डन वाले आचार्य तो थे नहीं इसलिये उन्होंने पारमार्थिक और व्यावहारिक दोनों दृष्टि कोणों का यथास्थान उपयोग किया है और दोनों को पूरी महत्ता दी है। परंतु उनके समूचे सिद्धांत वाक्यों का भली भांती स्वाध्याय करने से यह स्पष्ट हो जाता है। कि उनका यथार्थ दार्शनिक सिद्धांत अद्वैत है ।"

तुलसीदास जी ने इन तीन विषयों में क्या कहा है। अपनी दार्शनिक भावना प्रत्यक्ष और दृश्य जगत के आधार पर निर्मित की है । दार्शनिक अध्ययन के तीन प्रमुख क्षेत्र है ब्रम्ह, जीव माया और प्रकृति इन पर विचार कर लेना उपयुक्त होगा ।

तुलसी के ब्रहम राम

आराधना के लिए इष्टदेव को चुन लेना आवश्यक है किन्तु इस इष्टदेव को ईश्वर का ही प्रतिरूप मानना चाहिए अन्यथा आराधक का परम् अनुराग भक्ति नही कहलाएगा। परम् अनुराग जब ईश्वर की ओर हो तभी वह भक्ति कहलाती है। राम एक ऐसा सूर्य है जिनके सामने यह राम हमारे दिनों दिन जीवन के अनुभवों के भीतर से उजागर हुआ है वह मनुष्य के रूप में अवतरित हुआ है। लेकिन यह राम सब प्रकार से मनुष्य होकर परम् पिता परमात्मा है –

https://doi.org/10.31995/jgv.2024.v15iS1.019

राम ब्रम्ह परमारथ रूपा, अविगत अकथ अनादि अनूपा
सकल विकार रहिगत मेदा, कहि नितनहि निरूपहि वेदा

ऐसे परमपिता परमात्मा जो बिना पैर के चलते है, बिना कान के सुनते है यानी निर्गुन निराकार रूप है–

"बिनु पद चलई सुनई बिनु काना कर बिनु करम करई विधि नाना ।
आनन रहित सकल रस भोगी, बिनु वाणी वक्त बड़ जोगी ।।"

जो सर्वशक्तिमान ब्रहम है वही अधर्म को बचाने के लिए और भक्तों के प्रेमवश उन्हें दर्शन देने के लिए सगुण रूप धारण करता है। अतः ब्रहम निर्गुण भी है । सगुण भी भक्तों के प्रेमवश उन्हें दर्शन देने के लिए सगुण रूप धारण करता है अतः ब्रहम निर्गुण भी है सगुण भी–

जब जब होहि धरम कै हानी, बाढ़हि असुर अद्यम अभिमानी ।।
तब तब प्रभु धरि मनुज सरीरा, होहिं है या निधि सज्जन पीरा ।।"
ईश्वर अंश जीव अविनाशी । चेतन अमल सहज सुखरासी ।।
सो माया बस परयों गोसाई । बाँध्यों कीट मरकट की नाई ।।

माया :

माया का वर्णन तुलसीदास ने दो रूपों में किया है। प्रथम विधा माया द्वितीय अविधा माया विधा माया से सृष्टि का विकास होता है अविधा से दुख – उन्माद या भ्रम के रूप में व्याप्त होती है। सती, नारद, भुशुण्डि गरूड आदि पर विद्या माया का प्रभाव था । अविधा माया का प्रभाव रावण आदि पर था जो उन्हें ज्ञानहीन बनाये था वरन् दुराचार की ओर भी प्रेरित किये हुए था । माया के संबंध में राम लक्ष्मण से कहते है ।

' मै अरू मोर तोर तै माया, जेहि बस कीन्हें जीव निकाया।
गोगोचर जहं लगिमन जाई, सो सब माया जानेहु भाई ।।
तेहिकर भेद सुनहू तुम सोऊ, विद्या ऊपर अविधा दोऊ ।।
एक दृष्ट अतिशय दुख रूपा, जा सब जीव पराभव कूपा ।।'

जगत :

परमात्मा की इच्छा का परिणाम सृष्टि हेतु ब्रहम राम ने अपनी माया के द्वारा चराचर जगत का सर्जन किया है । सम्पूर्ण जड़ चेतन राममय है अतः मनुष्य को विवेक के द्वारा दोषों का परित्याग करके गुणों को ग्रहण करना चाहिए कोई जगत को सत्य मानता है कोई असत्य तो कोई दोनो माना है । परिणामवादी सांख्याचार्य की दृष्टि से जगत मिथ्या नहीं है किंतु तुलसीदास जी इस प्रपंच में नहीं पड़ते वे सिद्धांत को भ्रमात्मक बताकर स्पष्ट करते है–

कोउ कह सत्य झूट कह कोउ, जुगल प्रबल करि मानै ।
तुलसीदास परिहरै तीनि सो आपन पहिचानै । ।

वास्तव में सर्वजन कल्याण कारी भक्ति पथ है । वह एक राजमार्ग है जिस पर चलने पर सभी को सफलता प्राप्त हो सकती है। भक्ति यद्यपि शांत, सख्य, दास्य, वात्सल्य और

माधुर्य, ये पांच भाव कहे गये है । तुलसीदास जी यथार्थ में दास्य भाव को ही उपयुक्त मानते है । अन्यथा ईश्वर और जीव क बीच का यथार्थ संबंध विकसित नही हो पाता और विरह विकलता का कष्ट अधिक होता है । दास्य भक्ति के अंतर्गत पूर्ण आत्म समर्पण अनन्यता, दैन्य अनवरत लगन आवश्यक है। काक भुशुण्डि ने गरुड़ से कहा है–

"सेवक सेव्य भाव बिनु भवन तरिय उरगारि"

अनेक बातों के आधार पर हम कह सकते है कि तुलसीदास जी के दार्शनिक विचार न साम्प्रदायिक है न संकीर्ण । वे व्यापक और उदार है । जो बाते अनेक सम्प्रदायों में सभी को मान्य है ।

तुलसी ने उन्ही को ग्रहण किया है। उनकी धर्म संबंधी धारणा सर्वजन सुलभ और लोक कल्याणकारी है।

तुलसीदास जी का दार्शनिक सिद्धांत किस मतवाद के अंतर्गत है यह विवाद का विषय है । विद्वानों ने अपनी मान्यता और विचार धारा के अनुसार उन्हें किसी न किसी विशेष दार्शनिक पद्धति का समर्थक ठहराने का प्रयत्न किया है। तुलसीदास जी के दार्शनिक सिद्धांतो को न अद्वैतवाद कह सकते नहीं, द्वैतवाद, द्वैत और अद्वैतवाद की बीच की कड़ी विशिष्टाद्वैत ही मान सकते है। ज्ञान और भक्ति ध्यान और कर्म सबकी पुष्टि अनायास नही, जानबूझकर काव्यमाला में पिरोई गई है । यही कारण है कि गियर्सन जैसे विद्वान ने अपना अभिमत प्रकट करते हुए लिखा है–

गोस्वामी जी का झुकाव अद्वैतवाद की ओर अत्यधिक है परन्तु वे विषिश्टाद्वैवादी ही है और गोस्वामी जी ने इस मत का आभास दिया है

" सियाराम मय सब जग जानी ।
करौ प्रणाम जोरी जुग पानी । ।"

गोस्वामी जी का दार्शनिक आधार स्वतन्त्र है उनका दर्शन भक्ति दर्शन है ।

काव्य भाषा

गोस्वामी तुलसीदास जी ने अपनी काव्य भाषा में बहुत ही सुंदर और प्रभावशाली रचनाएं लिखीं हैं। उनकी काव्य भाषा सरल, सुगम, और जनप्रिय है। वे अवधी भाषा का प्रयोग करते थे, जो कि उत्तर भारत में प्रचलित थी। उनकी रचनाओं में संस्कृत और ब्रज भाषा के भी प्रमुख प्रभाव दिखाई देते हैं। उनकी भाषा गीत, रस, और भावनाओं को बखूबी प्रकट करती है और उनके द्वारा चित्रित चरित्रों को जीवंत करती है। तुलसीदास जी की काव्य भाषा ने हमें धार्मिक, सामाजिक और मानवीय मूल्यों का अद्वितीय अनुभव प्रदान किया है। तुलसीदास जी की काव्य भाषा में विविधता और गहराई है। उन्होंने भगवान राम, माता सीता, हनुमान, लक्ष्मण, और अन्य चरित्रों के लिए अद्वितीय और प्रेमपूर्ण वर्णन किया है। उनकी भाषा में भक्ति, प्रेम, सम्मान, और धर्म के प्रति गहरा आदर्श व्यक्त होता है। तुलसीदास जी की कविताएं आध्यात्मिक और मानवीय संदेशों को सरलता से समझाती हैं, जिससे लोग उनसे आसानी से जुड़ पाते हैं। उनकी कविताओं में जीवन के विभिन्न पहलुओं को समझाने के लिए उदाहरण दिया गया है,

जैसे कर्तव्य, प्रेम, समर्पण, और सहानुभूति। उनकी काव्य भाषा में आत्मीयता और भावनात्मक गहराई है, जो पाठक को उनकी रचनाओं में सम्मिलित करती है। उनके काव्य में विरह, प्रेम, और भक्ति के भाव इतने सार्थक और स्पष्ट हैं कि पाठक का मन भी प्रभावित हो जाता है। तुलसीदास जी की काव्य भाषा में ध्वनि और छंद भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। उनके रचनाकारी छंदों और ध्वनियों का प्रयोग उनके कविताओं को और भी गहरा बनाता है। उनके छंद और अलंकारों का प्रयोग कविता को गानीय और मनोहारी बनाता है, जिससे पाठक को उनकी कविताओं में विलीन होने का अद्‌भुत अनुभव होता है। तुलसीदास जी के काव्य में विभिन्न रसों का समावेश होता है। उनकी कविताओं में शांति, प्रेम, भक्ति, वीरता, विरह, आदि रसों का खूबसूरत मिश्रण होता है। यही कारण है कि उनकी कविताएं अपनी प्रेरणात्मक और आध्यात्मिक मूल्यों के लिए प्रसिद्ध हैं, और आज भी लोगों को प्रेरित करती हैं। इस प्रकार, गोस्वामी तुलसीदास जी की काव्य भाषा उनकी रचनाओं को एक अद्वितीय स्थान प्रदान करती है, जो आज भी सजीव और प्रेरणादायक है।

अध्ययन का महत्व

धार्मिक महत्त्व: उनके काव्य, विशेष रूप से रामचरितमानस, हिंदू धर्म के प्रमुख धार्मिक ग्रंथों में गिने जाते हैं। इनमें भगवान राम के जीवन और उनकी लीलाएं व्यापक धार्मिक सन्देशों के साथ प्रस्तुत की गई हैं।

साहित्यिक महत्त्व: तुलसीदासजी के काव्य का साहित्यिक महत्त्व भी अत्यंत उच्च है। उनकी रचनाओं में भाषा की सुंदरता, कवित्व की महानता, और गहरी विचारधारा का प्रकटीकरण होता है।

सामाजिक महत्त्व: उनके काव्य के माध्यम से सामाजिक संदेश और जीवन के नीति–नियमों का विस्तार होता है। उनकी रचनाएं समाज में नैतिकता, समर्पण, और सेवा की भावना को प्रोत्साहित करती हैं।

आध्यात्मिक महत्त्व: उनके काव्य में आध्यात्मिकता का अत्यधिक महत्त्व है। उनके द्वारा उजागर किये गए आध्यात्मिक सन्देश और भक्ति के माध्यम से व्यक्ति को आत्मज्ञान और दिव्यता की अनुभूति होती है।

इन सभी महत्त्वाकांक्षी पहलुओं के कारण, तुलसीदासजी के काव्य को समाज, संस्कृति, और साहित्य के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण माना जाता है। उनकी रचनाएं आज भी मानवता को आदर्शों और संदेषों से परिपूर्ण करती हैं।

निष्कर्ष:

तुलसीदास जी के काव्य का निष्कर्ष है कि जीवन का अध्यात्मिक और मानवीय मार्ग सही दिशा में अवश्य ही ले जाता है। उनके काव्य में उत्कृष्टता, धर्म, प्रेम, और साहस के मूल्यों का महत्व उजागर किया गया है। उन्होंने भगवान राम के चरित्र के माध्यम से मनुष्य को धार्मिक और आदर्श जीवन के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित किया है। उनकी रचनाएँ न सिर्फ आत्मिक उन्नति को प्रोत्साहित करती हैं, बल्कि समाज के सर्वसम्मति, न्याय, और प्रेम के मार्ग पर चलने

का संदश भी देती हैं। इस प्रकार, उनके काव्य का निष्कर्ष है कि सच्चा और सत्य परायण जीवन ही सच्ची खुशियों का स्रोत है।

संदर्भ

1. रामचरित मानस तुलसीदास 1/14/9
2. रामचरित मानस तुलसीदास 7/22/20, 21
3. तुलसी दर्शन : 210 पेज
4. रामचरित मानस तुलसीदास 1/117/5,6
5. रामचरित मानस तुलसीदास 7/73/ ख
6. रामचरित मानस तुलसीदास 7/117/2,3
7. रामचरित मानस तुलसीदास 3/15/2, 6
8. विनय पत्रिका : तुलसीदास 111 पेज
9. गोस्वामी तुलसीदास, रामचन्द्र शुक्ल, नागरी प्रचारणी सभा,वाराणसी
10. हिन्दी साहित्य का इतिहास, रामचन्द्र शुक्ल, नागरी प्रचारणी सभा,वाराणसी
11. अग्रवाल, सुधीर एंड यूएसए, राहुल और अग्रवाल, साहिल। गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रामचरितमानस के लिए एक प्रस्तावित नंबरिंग सिस्टम।
12. तिवारी, भव्या। बाबरी मस्जिद, बॉलीवुड और लिंगरू विश्व साहित्य के रूप में रामचरितमानस। 10-1002/9781118635193-बजूस0060.